विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय संस्कृत दिनांक 11-04-2021

वर्ग सप्तम शिक्षक राजेश कुमार पाण्डेय

एन० सी० ई० आर० टी० पर आधारित

संस्कृत वर्णमाला को चार भागों में विभाजित किया गया है:-

1. स्वर2. व्यंजन 3. विसर्ग 4. अनुस्वार

1. स्वर वर्ण:- (Vowels)

स्वयं राजन्ते इति स्वरा:।

जो वर्ण स्वयं उच्चारित होते है। अर्थात जो वर्ण बिना किसी सहायता के बोले जाते हैं। उन्हें स्वर कहते हैं।इनकी संख्या 13 होती हैं।

अ आ इ ई उ ऊ ऋ लृ ॠ ए ऐ ओ औ

स्वर तीन प्रकार के होते है।

1. ह्रस्व स्वर:- जिन वर्णों के उच्चारण में कम समय लगता है। उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं।

अ, इ, उ, ऋ, लृ

2. दीर्घ स्वर:- जिन वर्णों के उच्चारण में ह्रस्व स्वर का दोगुना समय लगता है उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं।

आ, ई, ऊ, ए, ऐ ,ओ, औ

3. प्लुत स्वर:- जिन वर्णों के उच्चारण में ह्रस्व स्वर का तीन गुना समय लगता है उसे प्लुत स्वर कहते हैं।उसके बाद 3 का अंक लिख दिया जाता है।

यथा:- ओ३म्।

2. व्यंजन:- (Consonants)

व्यज्यते वर्णान्त्र-संयोगेन द्यओत्यते ध्वनिविशेषो येन तद् व्यंजनम्।

जो वर्ण स्वयं उच्चारित न् होकर स्वर की सहायता से बोले जाते है। उन्हें व्यंजन वर्ण कहते